**एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा**

**(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)**

**********

**ऑनलाइन शिक्षण**

**********

**प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा )**

**********

Scanned by CamScanner

# अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

## भाग-20

**********

## बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, तृतीय वर्ष

**********

## पंचम पत्र - 'नाट्य साहित्य'

**********

Scanned by CamScanner

# जयशंकर प्रसाद- 'अजातशत्रु'

[अध्ययन व विश्लेषण भाग -19 का शेष (नाटक का मूल पाठ )...]

## द्वितीय अंक

**********

Scanned by CamScanner

**गौतम : ( हँसकर ) ठीक है। किन्तु, काम करने के पहले तो किसी ने भी आज तक विश्वस्त प्रमाण नहीं दिया कि वह कार्य के योग्य है। यह बहाना तुम्हारा राज्याधिकार की आकांक्षा प्रकट कर रहा है। राजन्! समझ लो, इस गृह-विवाद, आन्तरिक झगड़ों से विश्राम लो।**

**वासवी : भगवन्! हम लोगों के लिए तो छोटा-सा उपवन पर्याप्त है। मैं वहीं नाथ के साथ रहकर सेवा कर सकूँगी।**

Scanned by CamScanner

मागन्धी : पद्मावती! तू यहाँ तक आगे बढ़ चुकी है! जो मेरी शंका थी, वह प्रत्यक्ष हुई।

उदयन : ( क्रोध से उठकर खड़ा हो जाता है ) मैं अभी इसका प्रतिशोध लूँगा। ओह! ऐसा पाखण्ड-पूर्ण आचरण! असह्य!

Scanned by CamScanner

मागन्धी : क्षमा सम्राट्! आपके हाथ में न्यायदण्ड है। केवल प्रतिहिंसा से आपका कोई कर्त्तव्य निर्धारित न होना चाहिए, सहसा भी नहीं। प्रार्थना है कि आज विश्राम करें; कल विचार कर कोई काम कीजिएगा।

उदयन : नहीं ! ( सिर पकड़कर ) किन्तु फिर भी तुम कह रही हो-अच्छा मैं विश्राम चाहता हूँ।

मागन्धी : यहीं...

Scanned by CamScanner

**उदयन लेटता है , मागन्धी पैर दबाती है।**

**( पट - परिवर्तन )**

**(द्वितीय अंक की समाप्ति...)**

Scanned by CamScanner